कुमाउँनी समाज में बटरोही के कथा साहित्य का योगदान

मथुरा इमलाल*

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र में कुमाऊँ के साहित्यकार बटरोही के कथा साहित्य का अध्ययन किया गया है। इनके कथा साहित्य के माध्यम से कुमाऊँ अंचल के सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक सन्दर्भों को व्यक्त करने का प्रयास किया गया है। बटरोही कुमाऊँ से सम्बद्ध कवि होने के कारण उनके कथा साहित्य में कुमाऊँ के ग्राम्य, कस्बाई एवं नगरीय जीवन सन्दर्भों को व्यक्त होने का अवसर प्राप्त हुआ है। कवि ने अपने आस–पास के वातावरण से ही कथा साहित्य का चयन किया है। मूलतः कुमाऊँ अंचल में जन्मे, पले और बढ़े हुए बटरोही के कहानी में कुमाऊँ अंचल मुख्य रूप से दिखाई देता है।

बटरोही ने अपने कथा साहित्य सुनिश्चित भूगोल की स्थानिकता उसके दृश्यालेखों, निहित अर्न्तध्वनियों, परिवेशगत, जटिलताओं इन्हीं के बीच चेतना बुने गये सघन रूपों और उन्हें व्यक्त करने की वजह से ही ध्यान खींचा है, जो चीजों से निकटस्थ निरीक्षण और आत्मीय चिन्तन से जन्मा है। बटरोही के कथा साहित्य की पैनी दृष्टि से कुमाउँनी समाज के तीन वर्ग उच्च वर्ग, मध्यम वर्ग और निम्न वर्ग चित्रित हुए हैं।

बटरोही की अधिकांश कहानियाँ कुमाऊँ के आंचलिक जीवन से सम्बद्ध होने के बावजूद इनके कथा साहित्य में ग्राम्य, कस्बाई के साथ ही नगरीय जीवन सन्दर्भ भी सम्मिलित है। हिन्दी साहित्य के कवियों में बटरोही ने अपनी एक अलग पहचान बनायी है। आप उत्तराखण्ड के एक संघर्षशील, प्रतिभा सम्पन्न एवं स्वाभिमानी कवि हैं। बटरोही के कथा साहित्य से गुजरना जिन्दगी, समाज, समय के साथ–साथ एक सहयात्री की तरह आप उनके साथ हो जाते हैं और वह आपको स्थान, शहर, गाँवों, पगडंडियों, सड़कों से ले चले जाते हैं। आपने कुमाउँनी समाज एवं संस्कृति का अपने कथा साहित्य में अविस्मरणी चित्रण किया है, जो कुमाऊँ के आंचलिक जीवन से सम्बद्ध है।

मुख्य शब्द– कुमाउँनी समाज, संस्कृति, थोकदार, ग्राम्य, कस्बाई, घर–कुड़ी।

प्रस्तावना

बटरोही का जन्म अल्मोड़ा जिले के मल्ला सालम क्षेत्र के निकटवर्ती गाँव छाना में 25 अप्रैल, 1946 ई. में हुआ। बटरोही का वास्तविक नाम लक्ष्मण सिंह बिष्ट है। बटरोही के पिता का नाम श्री विशन सिंह बिष्ट और माता का नाम श्रीमती मधुली (माधवी) देवी था। ये दो भाई और दो बहिनें हैं। बटरोही के दो बेटे और एक बेटी है जो शिक्षित परिवार है।

इनकी प्रारम्भिक शिक्षा गाँव में हुई इसके पश्चात् वे अध्ययन के लिए नैनीताल चले गये थे। इन्होंने कक्षा छः से बारह तक की शिक्षा राजकीय इण्टर कालेज नैनीताल से प्राप्त की थी। इसके उपरान्त इन्होंने बी.ए. और एम.ए. की परीक्षा ठाकुर देव सिंह बिष्ट महाविद्यालय नैनीताल से उत्तीर्ण की थी और इसके बाद इलाहाबाद विश्वविद्यालय से डी. फिल. की उपाधि प्राप्त की। इनकी साहित्य में रूचि और साहित्यिक संस्कारों का बीजारोपण नैनीताल और इलाहाबाद ने इनकी साहित्यिक अभिरूचियों को तराशा था।

इन्होंने इलाहाबाद प्रवास के दौरान कुछ पत्रिकाओं के संपादकीय विभाग में काम किया। सन् 1965 तक पत्रकारिता से जुड़े रहे और पर्वतीय के सह–संपादक भी रहे तथा इसके बाद विकल्प संपादक (1967), नई कहानी (1967) के सह–संपादक तथा नई धारा (1970–71) के अतिथि संपादक रहे फिर 1970 से अध्यापन कार्य प्रारम्भ किया। शुरू में सरकारी कालेजों में अध्यापन कार्य किया।

बटरोही ने व्यवसाय के रूप में मुख्यतः अध्यापन को ही चुना है। शुरू में पत्र–पत्रिकाओं का संपादन का कार्य किया उसके बाद कुमाऊँ विश्वविद्यालय, ठाकुर देव सिंह बिष्ट परिसर के हिन्दी विभाग में प्रोफेसर तथा विभागाध्यक्ष के पद पर रहे।

बटरोही के कथा साहित्य के अनुशीलन से स्पष्ट होता है कि समकालीन कथाकारों में बटरोही का नाम अग्रणीय

* शोधार्थी, हिन्दी विभाग, डी.एस.बी. परिसर, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल

है। इनका 'दिवास्वप्न' कहानी संग्रह सबसे पहले 1978 में प्रकाशित हुआ। यह कहानी संग्रह समान्तर प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ। इसमें कुल सत्रह कहानियाँ संग्रहीत हैं। इस कहानी संग्रह में लेखक ने कुमाऊँ के आंचलिक जीवन के ग्राम्य, कस्बाई जीवन को प्रस्तुत किया है तथा कुछ कहानियाँ नगरीय जीवन से सम्बद्ध हैं। कुमाऊँ के ग्राम्य जीवन से सम्बद्ध कहानियों के चरित्र भौगोलिक, आर्थिक, सामाजिक कठिनाइयों को झेलते हुए भी इन कहानियों में एक प्रकार का आत्म बोध है, जो समकालीन बोध से उपजा जान पड़ता है। कहने का आशय यह है कि बटरोही के कुमाऊँ के ग्राम्य जीवन से सम्बद्ध कहानियों के चरित्र विषम परिस्थितियों से संघर्षरत होते हुए भी टूटते एवं बिखरते नहीं दिखाई देते हैं।

'बर्फ पर बढ़ते कदम' कहानी का पात्र चंदर माँ और भाई की असमय मृत्यु, वृद्ध पिता की बेबसी, आर्थिक दबाव, आर्थिक कठिनाइयों के बावजूद अपने लक्ष्य को पाता चित्रित हुआ है। इसी प्रकार 'लैम्पपोस्ट' कहानी का चरित्र भी चाचा की उदासीनता और चाची की क्रूरता एवं दुर्व्यवहार के कारण कष्ट पाते हुए भी वह पिता की हार्दिकताओं के कारण पलायन से बचता चित्रित हुआ है क्योंकि उसका आत्म बोध उसे भागने से रोकता है, ऐसे वह बड़ा आदमी नहीं बन पाएगा। गाँव के कितने लड़के बचपन में भागे थे। पर आज कोई होटल में बर्तन मलता था, कोई माली बना था। उसने बड़े–बड़े अफसरों को देखा था वह भी वैसा ही बनना चाहता था। हल्की लौ में जलते दिए के सामने उसने कई किताबें याद कर ली थीं और साल भर बाद वह कक्षा में अच्छे नम्बरों से पास भी हो गया था।[1]

'उसका बच्चा' कहानी में कुमाऊँ के ग्राम्य जीवन की आर्थिक विपन्नता, सामाजिक वर्गभेद और नारी की दशा का निरूपण हुआ है। कहानी के आरम्भ में ही कुमाऊँ की आर्थिक विपन्नता का चित्रण हुआ इसलिए इस कहानी का चरित्र चुंगी का एक रूपया बचाने के लिए लोधिया में ही उतर जाता है जबकि उसका टिकट अल्मोड़ा तक का है। इसके अतिरिक्त इस कहानी का पात्र शोबन सामाजिक वर्ग भेद के कारण प्रणय व्यापार में असफल चित्रित हुआ है। "यह बिष्ट फटक्वाल का चक्कर ही रहा, जिसके मस्तक से देवा के बौज्यू ने ही कहा था – फटक्वाल हमसे छोटे होते हैं कहाँ हम कहाँ वो।"[2]

'सड़क का भूगोल' यह कहानी संग्रह 1985 में प्रकाशित हुआ। इस कहानी संग्रह में कुल बारह कहानियाँ संग्रहीत हैं। इसमें भी एक साथ ग्राम्य, कस्बाई एवं नगरीय जीवन के कई सन्दर्भ व्यक्त हुए हैं। इन कहानियों में कुछ घंटे, हस्तांतरण, नेक आदमी, सड़क का भूगोल, प्रेत, किमारूष, काना लैंपपोस्ट, सूराख और कनकटा चश्मा, प्रतीमगामी, कटखने, मननाही दस बीस, क्यों?, घर कहाँ है? सड़क का भूगोल – इस सामान्य पहाड़ी शहर का भूगोल आपको बताने की जरूरत नहीं है। ठेठ हिंदुस्तानी कस्बे की तरह अपने पुराने तौर–तरीकों से असंतुष्ट शहराती कल्चर की ओर भागता हुआ कस्बा है। यहाँ शहर के बीचों–बीच एक झील के भूगोल की खास पहचान है और इस झील के दोनों ओर लम्बाई में दो राजपथनुमा सड़के हैं जिन्हें आज का अभिजात वर्ग 'द माल' के नाम से पुकारता है। इस कहानी में करीम और विक्रम के बीच सामाजिक कर्तव्य एवं अधिकार के बीच का संघर्ष व्यक्त किया है।[26]

बटरोही कृत 'अनाथ मुहल्ले का ठुलदा' कहानी सन् 1991 में प्रकाशित हुआ है। इस कहानी संग्रह में कुल सात कहानियाँ संग्रहीत हैं। इस कहानी संग्रह 'अनाथ मुहल्ले का ठुलदा' की कहानी विशुद्ध रूप से कस्बाई जीवन सन्दर्भों पर आधारित है, जो मध्यम एवं निम्न वर्गीय समूचे मुहल्ले के बच्चों का ठुलदा है। कहानीकार ने ठुलदा का चित्रण करते हुए लिखा है – "कभी गुल्ली डंडा, कभी धुच्ची, कभी डिब्बू–डिब्बू खेलते हुए ठुलदा रेफरी और सलाहकार बनते थे।"[21]

'महर ठाकुरों का गाँव' यह बटरोही का पहला उपन्यास है। इस उपन्यास की विषय वस्तु कुमाऊँ अंचल से सम्बद्ध है। उपन्यासकार ने कथानक के आरम्भ में ही कुमाऊँ अंचल के अल्मोड़ा जनपद के जिस गाँव को इसकी पृष्ठभूमि बनाया है वह गाँव सीरगाड़ है। उपन्यासकार ने इस शब्द की व्युत्पत्ति से उपन्यास के कथानक को गति दी है। पता नहीं यह नाम पहले नदी का पड़ा या गाँव का। गाँव का नाम भी सीरगाड़ है और नदी का भी। अल्मोड़े जिले की अनचिन्हित घाटी है। यह चारों ओर उठी हुई पहाड़ियों और घाटी के करीब मध्य में बसा हुआ गाँव है। यह नदी गाँव के किनारे से गुजरती हुई आगे बढ़ जाती है। यह नदी है सीरगाड़। विचित्र नाम है न तो यह नाम गाँव को देखकर सार्थक लगता है और न नदी को देखकर.....।[1]

इस उपन्यास का प्रमुख पात्र हरदा शास्त्री है जो बनारस से शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण करके अपने पैतृक गाँव सीरगाड़ आता है। यद्यपि उसके पास नौकरी के कई अवसर हैं किन्तु अपने जड़ों के प्रति उसका अपार प्रेम उसे आधुनिक एवं चेतना रहित गाँव में खींच लाता है। वह अपने गाँव आकर वर्षों से परिचालित अमानवीय रूढ़ियों से घिरे ग्रामवासियों खासकर नई पीढ़ी में नई चेतना लाना चाहता है, किन्तु घोर सामाजिक रूढ़ियों से घिरे गाँव के बुजुर्ग उसकी अवहेलना करते चित्रित हुए हैं।[2]

इस उपन्यास के कथानायक हरदा शास्त्री की कठिनाई यह है कि वह जाति से ठाकुर है। उसका ठाकुर होना उसके शास्त्री की उपाधि को चुनौती देता है क्योंकि वह शास्त्री उपाधि प्राप्त करके जिस गाँव में आया है वह अत्यन्त रूढ़ है।

इस उपन्यास में पधान (प्रधान) के रूप में हरदा शास्त्री उर्फ हरूवा को फटकारता चित्रित हुआ है।[3]

बटरोही का उपन्यास 'थोकदार किसी की नहीं सुनता' कथानक कुमाऊँ अंचल पनार नदी के किनारे बसे पिछड़े तलचट्टी गाँव की है। ऐसा गाँव जो आधुनिकता से बेखबर और अतीत की परम्पराओं का जीवंत दस्तावेज है। अतः इस उपन्यास का कथानक भले कुमाऊँ के एक छोटे भू–भाग के सामाजिक एवं सांस्कृतिक सरोकारों से सम्बद्ध है। कुमाऊँ का लोक जीवन अपने प्रवृत्त रूप में चित्रित हुआ है।[52]

थोकदार होता था – गाँव का मुखिया और वह सिर्फ मुखिया ही नहीं तलचट्टी जैसे गाँवों का तो वह राजा, महाराजा होता था। इस उपन्यास का मुख्य चरित्र थोकदार कल्याण सिंह बिष्ट है। तलचट्टी गाँव में पक्का मकान सिर्फ कलुवा थोकदार के बाप थोकदार दान सिंह का ही था। इस उपन्यास के कथानक का प्रारम्भ पनार के किनारे बसे गाँव से होता है।

बटरोही कृत 'बर्फ' उपन्यास का प्रकाशन 1978 में हुआ। इस उपन्यास का कथानक आठ खण्डों में गठित है। इसका स्रोत उपन्यासकार बटरोही के जन्म स्थान कुमाऊँ से सम्बद्ध है क्योंकि समूचे उपन्यास का कथानक आत्मकथा शैली में गठित है और कई स्थलों में उपन्यासकार से सम्बद्ध परिवेश तथा उसका बचपन, युवा अवस्था अभिव्यक्त होता दिखाई देता है। इस उपन्यास का कथानक न तो घटना प्रधान है न चरित्र प्रधान बल्कि इसके भीतर दो चरित्र प्रमुख रूप से उभरकर सामने आते हैं। इस उपन्यास के कथानक में प्रतीकात्मकता और सांकेतिकता पर्याप्त है। इस उपन्यास के आरम्भ में उपन्यासकार सांकेतिकता का आश्रय लेता है – "उन लोगों के सामने–सामने ही हम बिछुड़ गए थे मगर उन्हें इसका कोई अहसास नहीं हुआ था। कितनी अजीब सी बात होती है कि हम जिसे असम्भव समझते हैं उसके पीछे भागते रहते हैं और अन्त तक भी जब उसे नहीं पकड़ पाते तो भी कल्पना में उसके पीछे निरन्तर भागते रहते हैं।"[32]

वस्तुतः इस सांकेतिक प्रारम्भ से दो बातें उपन्यासकार ने प्रमुख रूप से कही हैं। पहली बात अपने परिवेश से बाहर निकले व्यक्ति से सम्बद्ध है जो बार–बार अपनी जड़ों से दूर जाने या बिछुड़ने की पीड़ा को समझता है जबकि वह अपने जिस समाज के लोगों से बिछुड़ता है उन्हें बिछुड़ने का अहसास नहीं होता। दूसरी बात यह कि अपनी जड़ों से बिछुड़ा व्यक्ति निरन्तर असम्भव का पीछा करता रहता है।

बटरोही मूलतः कुमाऊँ अंचल से सम्बद्ध कथाकार हैं फिर भी कथा चयन की दृष्टि से उनकी कथा साहित्य केवल कुमाऊँ के आंचलिक जीवन से सम्बद्ध नहीं है बल्कि उन्होंने छोटे–बड़े नगरीय जीवन से सम्बद्ध कहानियाँ लिखी हैं। कथा साहित्य में व्यक्त उच्च, मध्यम एवं निम्न वर्ग के विविध सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं राजनीतिक संदर्भ व्यक्त हुए हैं। इनके कथा साहित्य के अन्तर्गत ग्राम्य, कस्बाई और नगरीय जीवन से सम्बद्ध जीवन संदर्भों का चित्रण हुआ है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. बटरोही, लक्ष्मण सिंह : दिवास्वप्न, समान्तर प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1978 ई., पृष्ठ 1.
   वही, पृष्ठ 2.
2. बटरोही, लक्ष्मण सिंह : सड़क का भूगोल, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1985 ई., पृष्ठ 26.
   वही, पृष्ठ 31.
3. बटरोही, लक्ष्मण सिंह : अनाथ मुहल्ले के ठुल दा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1991 ई., पृष्ठ 21.
4. बटरोही, लक्ष्मण सिंह : महर ठाकुरों का गाँव, राधा कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1984 ई.
   पृष्ठ संख्या 01.
   पृष्ठ संख्या 02.
   पृष्ठ संख्या 03.
5. बटरोही, लक्ष्मण सिंह : थोकदार किसी की नहीं सुनता, विभाग प्रकाशन, 50 चाहचन्द, इलाहाबाद, 1988 ई. पृष्ठ 52.
6. बटरोही, लक्ष्मण सिंह : बर्फ, संभावना प्रकाशन, मेरठ, प्रथम संस्करण, 1978 ई., पृष्ठ 32.